UGC Approved - 45554 **Sangeet Galaxy**
Vol. 7, Issue. 1 (January 2018) pp. 81-87 **ISSN: 2319-9695**

लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष, व्यक्तित्व : एक संक्षिप्त अध्ययन (एक संघर्षशील स्त्री के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 वेद प्रकाश
पोस्ट डॉक्टरल फेलो
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
E-Mail: bpldraj@gmail.com

सारांश

किसी ने कहा है कि कलाकार और संघर्ष का चोली दामन का साथ है। यह बात पूरी तरह से चरितार्थ होती है स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के जीवन पर। जो भारतीय समाज में विशेषकर स्त्री समाज की अस्मिता को बनाये रखने में एक आदर्श है और उन तमाम गायिकाओं, कलाकारों के लिए प्रेरणा भी जो गुमनामी के अंधेरे में गायब रही। जिनको उनके क्षेत्र में अवसर नहीं मिला, जिनकी वह हकदार रही। समाज में स्त्रियों के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को स्वीकार न करने वाली मानसिकता के विरूद्ध जाना बहुत ही साहस का कार्य होता हैं। जिसका सामना कर लता ने सिद्ध किया कि वह एक योग्य और साहसी (बेटी) स्त्री है। पिता की मृत्यु के उपरान्त लगभग तेरह वर्ष की अल्प आयु में परिवार की जिम्मेंदारियों का निर्वहन आसान काम नहीं था। अपनी माँ, तीन बहनों और एक भाई को सम्भालना सचमुच लता जैसी साहसी, स्वाभिमानी बेटी ही कर सकती थी। एक बेटी (लता मंगेशकर) ने जो एक अद्वितीय संघर्ष कर, आदर्श को स्थापित किया वह आज 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं' के रूप में चरितार्थ हो रहा हैं। साथ ही संदेश भी देता है बेटी को गर्भ में मारने वाले और बेटी को बोझ समझने वाले लोगों के लिए भी। इस अध्ययन की सहायता से उनके जीवन संघर्ष, व्यक्तित्व, अभिनय, गायन आदि का गहराई से मूल्यांकन और विश्लेषण किया गया है, जिससे समाज में विशेषकर स्त्रियों में आये बदलाव व मूल्यों को रेखांकित किया जा सकें।

शोध पत्र का उद्देश्य : लता मंगेशकर के व्यक्तित्व का समाज के विभिन्न वर्गों की स्त्रियों के जीवन पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध–विधि : प्रस्तुत शोध पत्र सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें लखनऊ के विभिन्न क्षेत्रों से 30 से 50 आयुवर्ग के 400 लोगों को सम्मिलित किया गया है, साथ ही आँकड़ो के संग्रह के लिए प्राथमिक सामग्री स्रोत में प्रत्यक्ष निरीक्षण व साक्षात्कार–अनुसूची और द्वितीयक सामग्री स्रोत में लिखित प्रलेखों, व्यक्तिगत और सार्वजनिक जैसे डायरियाँ, आत्मकथाएँ, संस्मरण, जीवन इतिहास, सूचनादाता की वंशावली व पारिवारिक फोटो, एलबम, सरकारी व अर्धसरकारी गजेटीयर, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, इन्टरनेट, प्रकाशित व अप्रकाशित लेख, आदि, को सम्मिलित किया गया है।

मुख्य शब्द : स्त्री, संघर्ष, स्वाभिमान, समाज, प्रेरणा, जिम्मेदारी

परिचय :

लता मंगेशकर के जीवन संघर्ष, व्यक्तित्व के विषय में भारतीय रंगमंच, अभिनय, गायिकी आदि की उपस्थिति का सामाजिक रूप से विमर्श करने के लिए भारतीय समाज की तत्कालीन मूल्य दृष्टि और मराठी, हिन्दी फिल्म संसार के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने को जानना, समझना जरूरी है। यहाँ इस तथ्य को रेखांकित करना आवश्यक है कि लता मंगेशकर ने उस फिल्म क्षेत्र में काम करने के लिए निर्णय लिया, जिसे मध्यवर्गीय समाज हेय की दृष्टि से देखता था। इस बात की पुष्टि उनके पिता जी से भी होती है। क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि लता ऐसे पेशे से जुड़े जिसके लिए सामाजिक अवहेलना और अपमान सहना पड़े। लता जी अपने पिता को अपना जन्मदाता ही नहीं, संगीत का प्रथम गुरू भी मानती है। जिनका दिया संस्कार, ज्ञान, करुणा, शान्ती, मैत्री, स्वाभिमान हमेशा उनके पास है।

भारतीय समाज में देखा जाय तो सभी क्षेत्रों में पुरुषों का वर्चस्व कायम है। जहाँ स्त्रियों के लिए अपना स्थान बनाना बहुत ही कठिन काम है, ऐसे में कोई स्त्री अगर एक कदम आगे बढ़ कर अपना मुकाम स्थापित करती है, तो पुरुषों को खलने लगता है। कुछ इस तरह की स्थिति उस समय भी रही जब लता मंगेशकर ने फ़िल्मों में कदम रखा था। वह भी ऐसे क्षेत्र में जहाँ हमेशा से पुरुषों का दबदबा कायम रहा है।

श्री दीनानाथ मंगेशकर की पत्नी श्रीमती मंगेशकर ने 28 सितम्बर 1929 को एक विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न पुत्री को जन्म दिया जिसका नाम लता मंगेशकर रखा गया जो आगे चल कर ''स्वर साम्राज्ञी'' के नाम से विख्यात हुई।

लता मंगेशकर ने पाँच वर्ष की उम्र से ही अपने पिता के साथ बातौर रंगमंच में एक कलाकार के रूप में अभिनय करना प्रारम्भ कर दिया था। यहाँ यह बताना भी न्याय संगत प्रतीत होगा कि लता जी का मूल नाम 'हेमा' था। लेकिन जब उन्होंने अपने पिता के साथ एक नाटक 'भव बन्धन' में 'लतिका' नाम से काम किया तब से उन्हें ''लता'' पुकारा जाने लगा''। परिवार के भरण पोषण के लिए उन्होंने 1942 से ले कर 1952 कई मराठी फिल्मों में अभिनय और गायन किया। इनमें कुछ के नाम निम्न है जैसे– 'पहेली मंगलागौर' 1942, 'मांझेबाल' 1943, 'चिमुकला संसार' 1942, 'गजाभाऊ' 1944, 'बड़ी माँ' 1945, 'जीवन यात्रा' 'सुभद्रा' 1946, 'मंदिर' 1948 'छत्रपति शिवा जी' 1952, आदि''।

आँकड़ों का सारिणीकरण एवं विश्लेषण :

1: जो लोग इस मानसिकता से ग्रसित है कि केवल बेटा ही जीवन का सहारा बन सकता है, बेटी नहीं, जबकि लता मंगेशकर ने स्वंय को सिद्ध किया कि वह एक श्रेष्ठ बेटी है। (क्योंकि पिता की मृत्यु के उपरान्त लगभग तेरह वर्ष की अल्प आयु में परिवार की जिम्मेंदारियों का निर्वहन कर बेटे जैसा काम किया) जो ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं'' और ''बेटी है तो आज है, बेटी है तो कल'', जैसे स्लोगन को चरितार्थ कर रहा है, तो ऐसे में क्या आप उनके जैसा अपनी बेटियों को श्रेष्ठ बनायेंगे।

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	400	100.00
2	नहीं	.....	0.00
योग		400	100.00

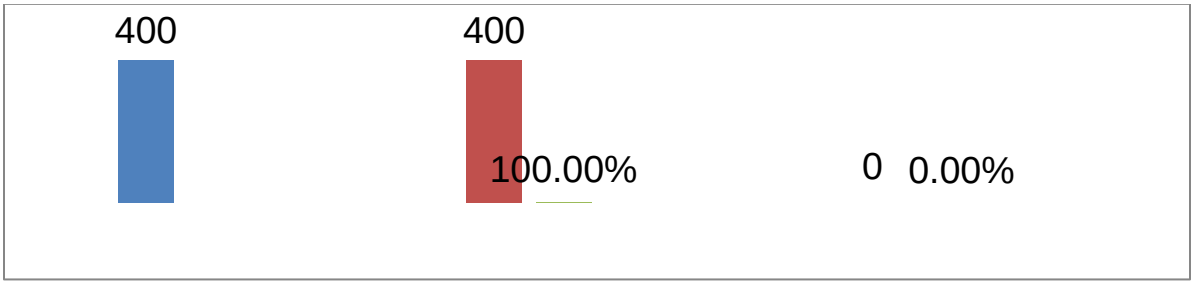

सारिणी संख्या 1 में सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि सचमुच लता मंगेशकर एक सर्वगुण सम्पन्न, श्रेष्ठ बेटी हैं। आज जरूरत है सरकार को और लोगों को, बेटियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और उनको अवसर देने की साथ ही उनकी बेहतरी के लिए कार्य करने की, जिससे उनके साथ हो रहे असमानता जैसे व्यवहार की पीड़ा उनके सामने उभर के न आये और समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान मिल सकें।

2: प्रथम बार लता मंगेशकर ने एक मराठी फिल्म में गीत गाया, जिसे बाद में फिल्म से निकाल दिया गया तो ऐसे में उनके साथ इस तरह के व्यवहार को आप निम्न में से किस रूप में देखेंगे। बताइये।

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	जान बुझकर उनके मनोबल को गिराना	133	33.25
2	एक स्त्री के अधिकारो का हनन। (भेद–भाव)	144	36.00
3	उनकी प्रतिभा को महत्व न देना	26	6.5
4	उपर्युक्त सभी से	80	20.00
5	पता नहीं	17	04.25
योग		400	100.00

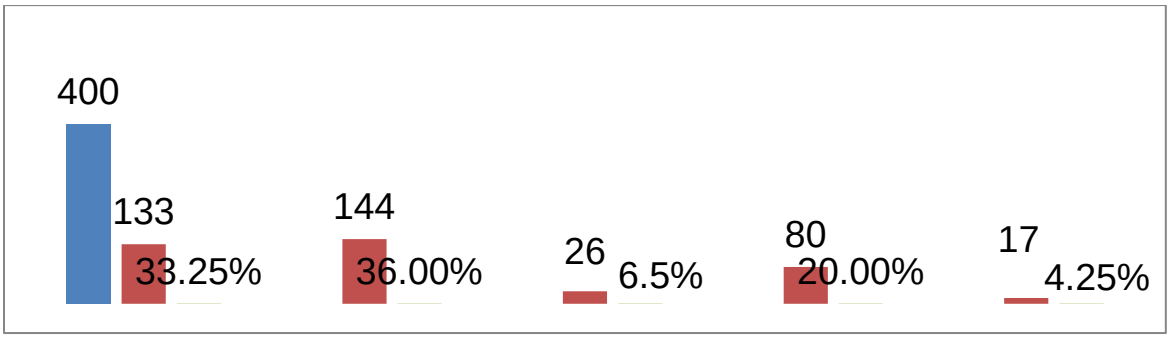

सारिणी संख्या 2 में सर्वाधिक 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि किसी भी व्यक्ति को किसी काम के लिए अवसर देकर फिर उसको उसके अधिकारों से वंचित कर देना, उसको महत्व न देना, इस तरह का व्यवहार उसके साथ अन्याय का प्रतीक समझा जाना चाहिए। 33.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि

उनके मनोबल को गिराने के लिए उनके गीत को सम्मिलित नहीं किया गया। 6.5 प्रतिशत उत्तरदातओं ने माना कि संगीतकार ने उनकी प्रतिभा को पहचानने के बाद भी जानबुझ कर उन्हें महत्व नहीं दिया। 20 प्रतिशत उत्तरदाता उपर्युक्त सभी बातो को सही ठहराते हैं, क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों के साथ भेद–भाव होता है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। 3.75 प्रतिशत उत्तरदाता उत्तर नहीं दे पाये। इस प्रकार सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि सबसे अधिक 36 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि उनके गीत को निकाल कर उनके साथ अन्याय हुआ।

3: लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष उन तमाम स्त्रियों के लिए एक आदर्श है, जिनको समाज ने हमेशा हाशिये पर रखा और लता मंगेशकर की वजह से उन लोगों को आगे बढ़ने की प्रेरणा व हिम्मत मिली। क्या आप इससे सहमत है?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	202	50.5
2	नहीं	41	10.25
3	थोड़ा–बहुत	106	26.5
4	पता नहीं	51	12.75
योग		400	100.00

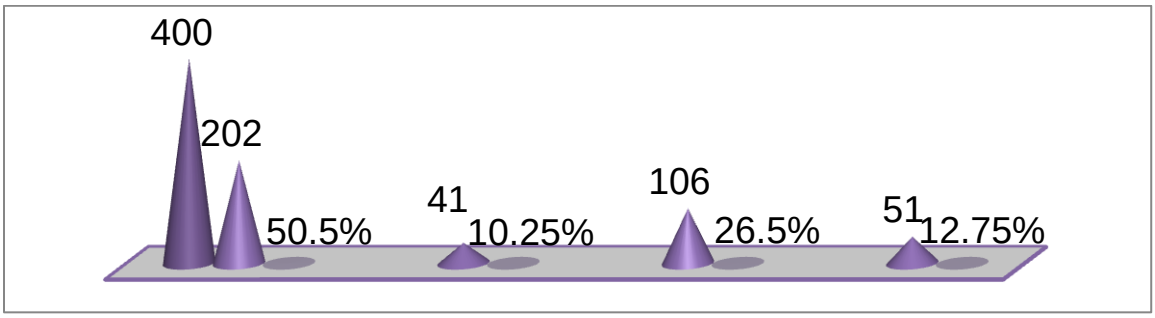

सारिणी संख्या 3 में सर्वाधिक 50.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि लता मंगेशकर लोगों के लिए आदर्श है और रहेंगी। 10.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वह इस विचार से सहमत नहीं हैं। 26.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि लता जी थोड़ा–बहुत उनके लिए आदर्श है क्योंकि उनसे कुछ न कुछ अच्छा करने की प्रेरणा मिलती है। जबकि 12.75 प्रतिशत उत्तरदाता उत्तर नहीं दे पाये। इस प्रकार इस सारिणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 50.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष उन तमाम स्त्रियों के लिए एक आदर्श है, जिनको समाज ने हमेशा हाशिये पर रखा और वह सम्मान नही दिया, जिसकी वह अधिकारी थी।

4: किसी समाज मे स्त्री की सबसे बड़ी त्रासदी यह है वह अपनी भूमिका खुद तय नहीं करती, उनकी भूमिका बाहुबली पुरुष और वहाँ की व्यवस्था तय करती है। लता जी का फिल्मों में काम करना ऐसी मानसिकता वालों के लिए चुनौती भरा रहा जो स्त्री स्वतंत्रता के पक्षधर नहीं थे। तो ऐसे में लता जी ने

पुरुष प्रधान समाज में काम करके सिद्ध किया कि किसी भी क्षेत्र में स्त्रियाँ पुरुष से कम नहीं है? तो उनके इस तरह के साहसिक कार्य और व्यक्तित्व का अन्य स्त्रियों पर कैसा प्रभाव पड़ा बताइये?

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	350	87.50
2	नकारात्मक	12	3.00
3	सकारात्मक, नकारात्मक दोनो	21	5.25
4	पता नहीं	17	4.25
योग		400	100.00

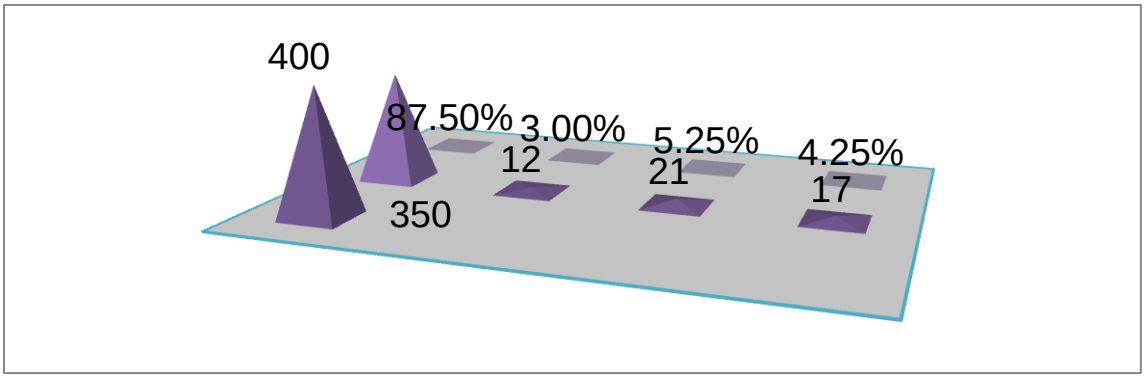

सारिणी संख्या 4 में 87.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि लता जी के साहसिक कार्य और व्यक्तित्व का अन्य स्त्रियों पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। 2.75 प्रतिशत उत्तरदाता नकारात्मक प्रभाव पड़ने की बात करते हैं। इस नकारात्मक प्रभाव में उनका कहना है लता जी ने जो देशभक्ति, संदेशपरक गाने गाये वह बहुत अच्छा है लेकिन कुछ ऐसे गाने है जो बहुत रोमांटिक है, वह थोड़ा उनके व्यक्तित्व के लिए अच्छा नहीं लगता, बाकी लता जी आदर्श है और रहेंगी। 5.25 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक और नकारात्मक दोनों का होना स्वीकार किया है, जबकि 4.25 प्रतिशत उत्तरदाता से उत्तर प्राप्त नहीं हो सका। इस प्रकार सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर 87.75 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि लता मंगेशकर के संघर्ष, हिम्मत को देख कर बहुत सी स्त्रियों के दिल, दिमाग में सकारात्मक रूप से आगे बढ़ने की लालसा उत्पन्न हुई, जिससे उनकी गायिकी अभिनय को सामाजिक गरिमा, वैधता मिलनी प्रारम्भ हो गयी जो सकारात्मक प्रभाव के रूप में दिखाई देता है।

5: लता मंगेशकर जी ने अपनी शादी नहीं की। निम्न में आप किस विचार से सहमत है।

क्रम संख्या	स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अपने कैरियर को सवाँरने में देर हो गयी इसलिए	132	33
2	बड़ी बेटी होने के नाते परिवार के भरण–पोषण के लिए	143	35.75
3	शादी करना उचित नहीं समझा	29	7.25

4	सभी के लिए	81	20.25
5	पता नहीं	15	3.75
योग		400	100.00

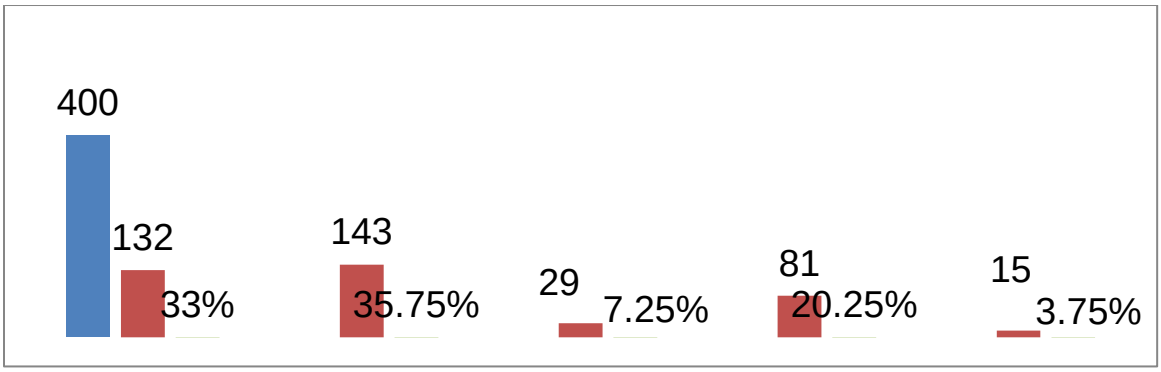

सारिणी संख्या 5 में सर्वाधिक 35.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि बड़ी बेटी होने के नाते परिवार के भरण पोषण के लिए लता जी ने शादी नहीं की। 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं बताया कि अपने कैरियर को सवांरने में देर हो गयी इसलिए उन्होंने शादी नहीं की। 7.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्होंने शादी करना उचित नहीं समझा क्योंकि उनके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी थी जिसका निर्वहन करना उनकी प्राथमिकता थी, इसी के चलते समय बीतता गया। 20.25 प्रतिशत उत्तरदाता उपर्युक्त सभी विकल्पों को स्वीकार किया है। जबकि 3.75 उत्तरदाओं से उत्तर प्राप्त नहीं हो सका क्योंकिं वे उनको जानते ही नहीं। इस प्रकार सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर 35.75 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि लता जी परिवार में सबसे बड़ी बेटी रही, जिनके ऊपर परिवार की जिम्मेदारियां रही जिसका उनको निर्वहन करना जरूरी था। इसी लिए शादी नहीं कीं। वह अपनी माँ, बहनों, भाई को वह सब कुछ देना चाहती थी जिसका सपना उनके पिता ने देखा था। इसी भावना ने उनको एक जिम्मेदार, स्वाभिमानी, कर्तव्यपरायण, कल्याणकारी, विकासोन्मुखी, त्यागमयी बेटी बना दिया।

प्रभाव :

लता मंगेशकर आज की तारीख में स्त्रियों के लिए आदर्श है। जिन्होंने 70 वर्ष पूर्व स्त्रियों की स्वतंत्रता के प्रति असमानता से भरी सामाजिक परिपाटी को नकार कर फिल्मों में काम करने का साहसिक निर्णय लिया था जो स्त्री के अधिकारों के लिए एक प्रयास था। उनका इस तरह का साहसिक कार्य स्त्री समाज के लिए उत्कृष्ट उदाहरण और संदेश है। उन तमाम कला और गुण से परिपूर्ण और अवसर से वंचित स्त्रियों के लिए भी जो समाज में हमेशा उपेक्षित रही, उनकी वजह से ही उनकी गायिकी को भी सामाजिक गरिमा, वैधता मिली, जिनकी वह हकदार रही। जिसको सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष :

लता मंगेशकर ऐसे परिवार से थी जहाँ का माहौल अभिनय और गायन से परिपूर्ण था। लेकिन उस समय स्त्रियों के लिए बाहर जा कर काम करना थोड़ा कठिन था। अपने पिता के जाने बाद छोटी मोटी शूटिंग करके पुरुष प्रधान समाज में लता ने अपने दम पर स्वंय को स्थापित किया। यह एक सामाजिक

अध्ययन का विषय बनता है, कि आख़िर क्यों एक स्त्री की स्वतंत्रता पर इतनी पाबंदी रहती है। क्या? यह एक स्त्री के अधिकार का हनन नहीं है? आज भले ही समय बदल गया हो, लेकिन उस समय जैसी पाबंदी थी आज भी वह परंपरा कुछ ऐसे लोगों के बीच कायम है जो बेटियों को बोझ समझते है। लता मंगेशकर ने छोटी सी उम्र में स्वंय को (रंगमंच) नाटक में अभिनय कर और फिल्मों में गाना गाकर खुद की एक अलग पहचान बनाई। पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री का काम करना नये रास्ते पर चलना है। जिसे पुरुष समाज स्वीकार तो करता है, लेकिन बड़ी कठिनाई के बाद। जिसे लता मंगेशकर के संदर्भ में देखा जा सकता है। बेटी हो करके भी उन्होंनें परिवार के लिए बेटे जैसा काम किया। जो बेटियों के लिए सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

सुझाव :

जो लोग इस मानसिकता से ग्रसित है कि केवल बेटा ही जीवन का सहारा बन सकता है, बेटी नहीं, तो लता मंगेशकर स्वयं उन लोगो के लिए एक उदाहरण है, संदेश है, उनसे सीख लेनी चाहिए। बेटियों की सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता, स्वतंत्रता के लिए समाज के हर व्यक्ति को काम करना चाहिए। भारतीय संविधान में महिलाओं के सम्पूर्ण विकास के लिए कानून है जिसका पालन सरकार और समाज को करना चाहिए। यह सबकी नैतिक जिम्मेदारी है। आज के दौर में बेटियाँ हर क्षेत्र में बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है, यह हम सबके लिए गौरव की बात है। बेटी है तो आज है – बेटी है तो कल, वरना जीवन शून्य है। और साथ ही हर (बेटी) स्त्री को अपने अन्दर ऐसा आत्मविश्वास, स्वाभिमान जागृत करना चाहिए कि वह सकारात्मक रूप से अपने मन के विचारों को साकार करने को स्वंय आगे आये।

संदर्भ–सूची :

1- दास, विनोद, ''नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ की मासिक पत्रिका, अंक 139, सितम्बर 2014,
2- सचदेव, पद्मा, ''लता मंगेशकर : ऐसा कहाँ से लाऊ'' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–3, संस्करण–2014,
3- घांगुर्डे, डॉ0 वंदना रवींन्द्र ''स्वरसम्राट दीनानाथ मंगेशकर (एक संगीतमय जीवनी) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली–2, सं0–2014,
4- भिमानी, हरीश ''लता दीदी अजीब दास्ता है ये'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2, सं0–2009,
5- राव, डॉ संजीव भाष्कर ''भारतीय सिनेमा : शिखर सम्मान–दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली–2, सं0–2014,
6- http://hi.bharatdiscovery.org/india 26.09.14
7- http://hi.wikipedia.org/s/ckj date-25-9-14